तिरिया जनम सुफल

चरैवेति-चरैवेति, चलाना बस, चलना है।
सीता का निर्वासन,अहल्या का लांछन।।

गाँव का सिवान, कस्बो का, नगरो का घर आंगन।
सदियों से अनल दाह झेलता, यह तिरिया जनम।।

शंख, चक्र, गद्दा, पथ, अष्टभुजा मातृका
शिव से पहले पूजित,गौरी, भवानी, शिवा।
खप्पर में रक्त वीज धारती, जगजननी दुर्गा।।

मंत्र पूत शक्ति का,अमृत भाव भरती है।
वत्सलता विभव, चेतनता निर्भय,
तिरिया जनम सुफल।।

आज नही तो कल!

कमलेश पान्डे
ऑफिस एक्जीक्यूटिव
रांची

तलाश

इस दिल -ए-फितरत को क्या पैगाम दें
इस गम -ए-जिन्दगी को क्या नाम दें
जिस दरखत की तलाश न थी हमे
उस छाँव को भला क्या पैगाम दें।

घने अँधेरों में मुझेदिखा दी जुगनु ओ ने राह
इन नन्हे फरिश्तों को हमभला क्या ईनाम दें।

डूब जाते हम कब केजज्बातों के भँवर में
किनारों पर लाने वालीवक्त की लहरों को भला
हम क्या सलाम दें।

बच गयी जिनकी बदौलत हस्ती हमारी
उस सरपरस्त को हम भला क्या जॉनो-ईमान दे।

जब हर खतरा मुझमेंऔरों का हैं-
उसमें हम अपना किसी को क्या निसार दें!

अजय कुमार साहू
अकाउंटस, लखनऊ

प्रेरणा

बिखरती नही है-आसमाँ से गिरी बूँद भी
जब तक उसे सहारा नही मिलता
फिर कैसे भूल सकोगे मुझको
मेरे जैसा शख्स,
दुनियाँ में दोबारा नहीं मिलता !

मिलता है कोशिशों से तख्तो-ताज भी
चाहने से ही मौजों को किनारा नहीं मिलता

वो दौर और था जब
डूबने वाले को मिल जाते थे-
बचाने वाले हाथ,
पर आज-कल तिनके का भी
सहारा नहीं मिलता!

क्यूँ ढूढते हो दुसरों में
खुशियाँ अपने हिस्सें की
जब कि सागर में खोई हुई
नदियों का किनारा नही मिलता।

नितिन खन्ना
अकाऊंट्स,लखनऊ।

हर रोज काम पर जायेंगे :-

हर रोज काम पे जायेंगे, हम आगे बढ़ते जायेगे।
कर्त्तव्य के पथ पर चलके हम जीवन को सफल बनायेंगे।।
हम रोज काम पर जायेंगे

चाहे कितनी अँधियारा हो, अज्ञान की हर ओर साया हो।
हम फस्ट फलाईट के सपनों को
हर जन-जन तक खूब पहुँचायेगें।
हम आगे बढ़ते जायेंगे.....

मेहनत तन-मन से कर-करके आलस को तज आगे बढ़के,
दुनिया की क्षितिज पर इस कुरियर को हम चमकाएँगे।
हम ओगे बढ़ते जायेंगे.....

मेरी है तमन्ना और दुआ गति से आगे बढ़ता जाय और
तत्पर हो सेवा में सभी के अपना नाम रोशन करता जाय,

हर दिल दिमाग पर हरेक के स्वर लहरी सा लहरायेंगे।
हम आगे बढ़ते जायेंगें.....

प्रेम सागर सिंह
फिल्ड स्टाफ, समस्तीपुर शाखा
जिला-समस्तीपुर बिहार

तारीफ

जैसे उड़ती हवा मे काईट, वैसे अपनी फर्स्ट फलाईट
काम से वो न पीछे हटती, कोशिश तो वो पूरी करती
पैकेट कभी हो जाए लेट, रहते उसके वाजिब रेट
कभी फलाइट टाइम से जाती, और कभी ओफ हो जाती
फिर तो पैकट लेट पँहुचते, ब्रान्च मे भी देर से जाते
डिलीवरी बॉय फिर कहाँ भटकते, तब पैकट को होल्ड ही रखते
फिर क्लाइंट होते हैरान, करते सी.एस्.डी को परेशान
सी.एस्.डी का काम है एक, क्लाइंट को पडते रहना भोल
कभी तो उनकी बाते सुनते, और कभी डांटे सुनते
इतने से भी बस न हो, तो क्लाइंट की गाली सुनते
क्लाइंट का फोन रखने के बाद, अपने मे ही जलते-भुनते
उस पर सायी से बाते करते, अपने गम को दूर करते
अगली कॉल पर मुस्काते, कलाइंट को फिर से बहकाते
ये है एक ऐसा विभाग, जिसका रहता दिमाग खराब
सभी की उलजन को सुलजाते, अपने गमो को है भुलाते
ये क्या ऐसी गलती करते, जिसमे रहता हर वकत विवाद
सोचों उसका क्या है नाम, और सोचो कया है पहचान
जिसकी बाते कलाइंट मानते, हम उसे सी. एस्. डी के नाम से जानते।

रोशनी
सी. एस्. डी एक्जीक्यूटिव, दिल्ली।